ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०३
दिनांक- मंगलवार, १० जनवरी, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 15.2 एवं 6.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 77 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.6 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 11.4 एवं दोपहर में 18.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(11–15 जनवरी, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 11–15 जनवरी, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। अगले २ दिनों तक ऐसे ही कोल्ड डे की स्थिति बने रहने की सम्भावना है। लेकिन दिन में मौसम साफ रह सकता है। लगातार पछिया हवा तथा सामान्य से कम तापमान रहने के कारण कनकनी ठण्ड अभी बरकरार रह सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान में वृद्धि के साथ यह तापमान 16 से 18 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान में गिरावट आ सकती है। यह 6–8 डिग्री सेल्सियस के बीच बने रहने की संभावना है। सुबह में मध्यम कुहासा छा सकता है।
- इस पूर्वानुमानित अवधि में लगातार पछिया हवा, 6 से 8 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व शिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पुरा पौधा झुलस जाता है। पत्ती पर भुरे रंग के जलीय धब्बे बनते है। कभी–कभी भुरे व काले घब्बे तने पर दिखाई देते है जिससे कंद भी प्रभावित होते है। इस रोग के लक्षण दिखने पर डाई–इथेन एम0 45 फफूँदनाषक दवा का 2 किलोग्राम 1000 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से 2–3 छिड़काव 10 दिनों के अन्तराल पर करें। आलू में कजरा पिल्लू दिखने पर फसल में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 का 2.5 लीटर 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। दोनों दवाओं को मिलाकर किसान भाई छिड़काव कर सकते है। पिछात आलू में प्रति हेक्टेयर 75 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेषन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- आलू में 10–15 दिनों के अन्तराल में सिंचाई करें। कटवर्म या कजरा पिल्लू कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो 50 से 60 दिनों की अवस्था में है। उसमें सिचाई कर 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट 10 जी0 या कार्बोफ्यूरान 3 जी0 का 7–8 दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन 250–300 मि0ली0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- समय से बोयी गई गेहूँ की 45 से 50 दिनों की फसल जो कल्ले निकलने की अवस्था में है, उसमें दूसरी सिंचाई करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो 21 से 25 दिनों की हो गयी हो उसमें सिंचाई कर 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें।
- मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए 2 प्रतिषत यूरिया के घोल का छिड़काव करें। मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें।
- अरहर की फसल जिसमें 50 प्रतिषत फूल आ गया हो उसमें फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मी0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। पिछात फूलगोभी/बन्दगोभी में डायमंड बैक मॉथ कीट की निगरानी करें। यह कीट सलेटी भुरे रंग का पिल्लू होता है, जिसके शरीर पर छोटे–छोटे बाल होते है। इसके पिल्लू पत्तियों का खाकर उसमें छोटे–छोटे छेद बना देते है। पौधे की वृद्धि रुक जाती है,फलस्वरुप पौधो पर शीर्ष छोटा बनता है तथा फसल की काफी हानि होती है। बचाव हेतु प्रकाष प्रपंच लगावे। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पेनोसेड 1 मी0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मिर्च की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करे। इसके शिशु/वयस्क कीट सैकड़ो की संख्या में पौधो की पत्तियो की निचली सतह पर छिपे रहते हैं और कभी–कभी उपरी सतह पर भी देखे जा सकते हैं। ये पत्तियो, कलियो व फूलो का रस चुसते है। यह कीट मिर्च में बांझी विषाणु रोग फैलाता है। इससे बचाव हेतु इमिडक्लोप्रीड 17.8 ई0सी0 का 1 मी0ली0 या डायमेथोएट 30 ई0सी0 का 2 मि0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे।
- तापमान में गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दुध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से 50 ग्राम नमक, 50 से 100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पषु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः 15.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 7.7 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 7.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.9 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)